धनबाद जिला के बलियापुर प्रखण्ड में संथाल जनजाति के राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन : (वर्ष 2000 ई0 से वर्तमान समय तक)

विनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

के सामाजिक विज्ञान संकाय (राजनीति विज्ञान विभाग) में पीएच0 डी0 की उपाधि
हेतु प्रस्तावित शोध प्रबंध
द्वारा

<u>शोधार्थी</u>

अनिल कुमार महतो

पंजीयन संख्या– ....

राजनीति विज्ञान विभाग, बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

<u>शोध निदेशक</u>

डॉ0 धर्मेन्द्र कुमार सिंह (सहायक प्राध्यापक)

राजनीति विज्ञान विभाग, बीएस सिटी कॉलेज बोकारो

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद (झारखण्ड)

अक्टूबर– 2023

प्रस्तावना

संथाल जनजाति भारत की एक प्रमुख जनजाति है जो भारत के विभिन्न राज्यों झारखण्ड, बिहार, पश्चिम बंगाल, छतिसगढ़, ओड़िसा आदि, राज्यों में पाये जाते है। यह जनजाति बहुत प्राचीन है। आज के आधुनिक युग में भी उनकी स्थिति जस की तस बनी हुई है। विज्ञान तकनीकी प्रौद्योगिकी संचार जो विकास के नए आयाम छूँ रहे है पर आज भी संथाल जनजाति की दशा में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आ पाया है।

संथाल जनजाति की झारखण्ड राज्य के परिप्रेक्ष्य में बात करे तो यह जनजाति राज्य की सबसे बड़ी जनजातिय समुदाय है जिनका राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विकास अन्य समुदायों की तुलना में न के बराबर हुआ है। झारखण्ड की राजनीति के आधार स्तभ जिनका झारखण्ड अलग राज्य के निर्माण में भी उनकी भूमिका व्यापक थी परंतु झारखण्ड गठन के 23 वर्षों के बाद इनकी स्थिति में कोई परिर्वतन नहीं आया है। अशिक्षा, गरिबी एवं स्वास्थ्य आज भी इनकी सबसे बड़ी समस्या है।

राज्य के स्तर पर देखने के बाद जब हम अध्ययन क्षेत्र धनबाद जिला के बलियापुर प्रखण्ड को देखते है। जो इस प्रखण्ड में भी वैसी ही स्थिति है जैसा राज्य स्तर पर है। सामान्यतः इस प्रखण्ड में रहने वाले संथाल जनजाति अन्य समुदायों की तुलना में राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़ा हुआ है एवं विकास नहीं हो पाया है तकनीकी युग में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी उनके पहनावा तक ही सीमित है।

प्रशासन की सुविधा के लिए बलियापुर प्रखण्ड को 23 पंचायत, 3 कस्बों और 64 गांवों में विभाजित किया गया है।[1.]

बलियापुर प्रखण्ड में अनुसूचित जनजाति की कुल आबादी 13.3 प्रतिशत है।[2.]

बलियापुर प्रखण्ड में आदिकाल से रह रहे संथाल जनजाति इस प्रखण्ड के सभी पंचायतों में पाये जाते है। वर्ष 2000 से वर्तमान समय तक उनका पिछड़े रहना राजनीतिक, समाजिक एवं आर्थिक स्थिति को दर्शाता है। उनकी स्थिति में सुधार नीतियों का प्रभावी ढंग से क्रियान्वयन हो इस शोध अध्ययन का विषय क्षेत्र रहेगा।

उनकी समस्या का समाधान उन्हें शिक्षित कर और राज्य तथा जिला स्तर की सरकारी योजनाओं से जोड़कर कर सकते है। ऐसा कर संथाल जनजाति को शोषण मुक्त कर सकते है। उनका विकास जनसंख्या में वृद्धि कर और उन्हें लुप्त होने से बचा सकते है। धनबाद जिला का बलियापुर प्रखण्ड हो या राज्य के अन्य जिलों के संथाल जनजाति, समाज के जीवन शैली हो या फिर उनकी राजनीतिक प्रभाव सबसे ज्यादा दयनीय स्थिति उनकी शैक्षणिक स्थिति है। शिक्षा के द्वारा ही संविधान में प्रदत्त अपने राजनीतिक अधिकार से वे सजग होंगे और समाज में अपने को

स्थापित कर पाएंगे। राज्य सरकार और जिला प्रशासन को इनके लिए ऐसी योजना लानी चाहिए जिससे इनका प्रकृति प्रेम बना रहे। साथ ही साथ यह जनजाति समाज अन्य समाज के साथ बराबरी कर सके। नही तो यह समुदाय बहुत जल्द लुप्त हो जाऐगा।

साहित्य समीक्षा

संथाल जनजाति के राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति पर अध्ययन करने के संबंध में अनेक पुस्तके प्रकाशित हुई है जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकों के अध्ययनों की समीक्षा निम्न है।

1. मुंडा (2014) : ने अपनी पुस्तक ''आदिवासी अस्तित्व और झारखण्डी अस्मिता का सवाल'' में आदिवासी जनजातीय समुदाय के साथ–साथ संथाल जनजाति और झारखण्ड के निर्माण पर उनके योगदान पर अध्ययन किया गया है। इसमें जनजातियों के द्वारा किए गए विरोध एवं क्रांतिकारी पहलुओं की जानकारी प्राप्त हुई है।
2. हसनैन (2016) : की पुस्तक ''जनजातीय भारत'' में भारत के विभिन्न जनजाति के बारे में अध्ययन के साथ साथ संथाल जनजाति पर भी गहन अध्ययन किया गया है। इस पुस्तक के अध्ययन के द्वारा संथाल–जनजाती के विभिन्न पहलुओं की जानकारी प्राप्त हुई है।
3. विद्यार्थी (2018) : द्वारा लिखित पुस्तक ''कल्चरल टाईप इन ट्राईबल बिहार'' में संथाल जनजाति के पारम्परिक और संस्कृति के बारे में बतलाया गया है। अतः संथाल जनजाति के संस्कृति से अवगत हो पाया हूँ।
4. विद्याभूषण (2016) : ने अपनी पुस्तक ''झारखण्ड समाज संस्कृति और विकास'' में संथाल समाज एवं उनकी संस्कृति के बारे में बतलाया गया है।
5. विरोत्तम (2020) : ने अपनी पुस्तक ''झारखण्ड इतिहास एवं संस्कृति'' में झारखण्ड के एतिहासिक विवरण के साथ–साथ संथाल जनजाति के संस्कृति को बतलाया गया है।
6. दत्त (2014) : की पुस्तक ''कहानी झारखण्ड आंदोलन की'' में संथाल जनजाति के झारखण्ड निर्माण में उनकी भूमिका को बतलाया गया है।
7. तिवारी (2001) : ने अपनी पुस्तक ''झारखण्ड का भुगोल'' में संथाल जनजाति के भौगालिक क्षेत्र झारखण्ड के किन–किन क्षेत्र में निवास करते आ रहे है को बतलाया गया है।
8. अपर्णा (2020) शोध लेखिका अपर्णा ने अपनी शोध ग्रंथ ''झारखण्ड की संथाल जनजाति का सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास (1850–1950 ई0 तक) एक एतिहासिक विश्लेषण में सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक के साथ–साथ राजनीति पर गहन अध्ययन किया गया है।

शोध समस्या

झारखण्ड गठन के बाद इन 23 वर्षों में भी संथाल जनजाति ने राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से अपना विकास नहीं कर पाया है। यह एक प्रमुख समस्या है। वर्तमान समय में

धनबाद जिला के बलियापुर प्रखण्ड में संथाल जनजाति के राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया जाना आवश्यक है। इससे धनबाद जिला के बलियापुर प्रखण्ड की वास्तु स्थिति विशेषकर संथाल जनजाति की पिछड़े दशा का पता चलता है। उनका अध्ययन कर सके जो यहां आदिकाल से निवास करते आ रहे है। इस अध्ययन का कार्य होगा संथाल जनजाति की राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के नए संभावना और चुनौतियों की जांच करना जिससे संथाल जनजाति के राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो सके।

इस अध्ययन में निम्नलिखित प्रश्नों के उतर दिए जाएगें।

क. धनबाद जिला के बलियापुर प्रखण्ड में संथाल जनजाति में क्या क्या बदलाव हुए?

ख. धनबाद जिला के बलियापुर प्रखण्ड में संथाल जनजाति के राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के अध्ययन से क्या क्या संभावित अवसर और चुनौतियां है?

ग. धनबाद जिला के बलियापुर प्रखण्ड में संथाल जनजाति के कौन–कौन से क्षेत्र में सहयोग हो सकता है और कैसे?

घ. धनबाद जिला के बलियापुर प्रखण्ड में संथाल जनजातियों को चुनौतियों का सामना करने के लिए कौन–कौन सी नीतियां अपनानी चाहिए?

शोध कार्य का उद्देश्य

प्रस्तावित शोध हेतु प्रस्तावित विषय धनबाद जिला के बलियापुर प्रखण्ड में संथाल जनजाति के राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययनः वर्ष 2000 ई0 से वर्तमान समय तक का प्रमुख उद्देश्य बलियापुर प्रखण्ड में संथाल जनजातियों के राजनीतिक सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन कर उसके समाधान की दिशा में हर संभव विकल्प की खोज करना है।

अतः अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य अग्रलिखित है।

क. धनबाद जिला के बलियापुर प्रखण्ड में संथाल जनजाति के राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डालना।

ख. धनबाद जिला के बलियापुर प्रखण्ड में संथाल जनजाति के बदलते स्वरूप का अध्ययन करना।

ग. धनबाद जिला के बलियापुर प्रखण्ड में संथाल जनजाति के वास्तविक स्थिति को दर्शाना।

घ. धनबाद जिला के बलियापुर प्रखण्ड में संथाल जनजातियों तक पहुंचने वाले सरकारी योजनाओं का विश्लेषण करना।

शोध परिकल्पना

परिकल्पना अनुसंधान कार्य का मार्गदर्शन करता है। परिकल्पना का मुल उद्देश्य परीक्षात्मक एकरूपता के मध्य तार्किक संबंधों के अस्तित्व का अध्ययन करना है प्रस्तावित शोध हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का प्रयोग किया जाएगा।

क. धनबाद जिला के बलियापुर प्रखण्ड में संथाल जनजातियों की राजनीतिक भागीदारी में बढ़ोतरी हुई है।

ख. शिक्षा में विकास होने के कारण उनकी सामाजिक दशा में सुधार हुआ है।

ग. धनबाद जिला के बलियापुर प्रखण्ड में संथाल जनजातियों के बीच सरकारी योजनाओं के कारण उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए ऐतिहासिक वर्णनात्मक विश्लेषणात्मक अध्ययन पद्धति पर अधारित होगा। इस शोध में सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया जाऐगा।

शोध हेतु स्त्रोत

प्राथमिक स्त्रोत

क. क्षेत्र भ्रमण

ख. व्यक्तिगत साक्षात्कार

ग. प्रश्नावली

द्वितीयक स्त्रोत

संबधित साहित्य की विभिन्न पुस्तकें, पत्र पत्रिका व अंग्रेजी व हिन्दी की विभिन्न विद्वानों द्वारा लिखे गए लेख।

क. केन्द्रीय चुनाव आयोग की सूचनाएं

ख. राज्य चुनाव आयोग की सुचनाएं

ग. जिला प्रशासन की बेवसाईट पर उपलब्ध सूचनाएं

प्रस्तावित शोध का महत्व

- प्रस्तावित शोध से धनबाद जिला के बलियापुर प्रखण्ड के संथाल जनजातियों के राजनीतिक जीवन की जानकारी प्राप्त होगीं।
- प्रस्तावित शोध से धनबाद जिला के बलियापुर प्रखण्ड में संथाल जनजातियों के सामाजिक दशा की जानकारी प्राप्त की जाएगी।
- प्रस्तावित शोध में धनबाद जिला के बलियापुर प्रखण्ड में जनजातियों के आर्थिक स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त होगी।

अध्ययन की सीमाएं

- मेरे द्वारा पुछे गए प्रश्नों का उतर सही एवं स्पष्ट मिलेगा की नहीं।
- अशिक्षा के कारण प्राप्त जानकारी स्वतंत्रता पूर्वक देगें की नहीं।
- जनप्रतिनिधियों का सहयोग प्राप्त होगा कि नहीं एवं यह मेरी शंका है।
- उस क्षेत्र से संबंधित संथाल जनजाति की कोई पुस्तक उपलब्ध नहीं है।

भविष्य के कार्य

भविष्य के काम के रूप में संथाल जनजाति धनबाद जिला के बलियापुर प्रखण्ड के संथाल जनजातियों पर जो शोध किए जाएगें उससे भविष्य में दूसरे शोद्यार्थियों को मदद मिलेगी एवं सरकार को अपनी नीतियों को लागु करने में संभावित मार्गदर्शन मिल सकता है।

अध्यायिकरण

प्रस्तावना

प्रथम अध्याय : संथाल जनजातियों का इतिहास

द्वितीय अध्याय : धनबाद जिला के बलियापुर प्रखण्ड में संथाल जनजातियों की राजनीतिक स्थिति

तृतीय अध्याय : धनबाद जिला के बलियापुर प्रखण्ड में संथाल जनजातियों की शिक्षा एवं उनकी सामाजिक स्थिति

चतुर्थ अध्याय : धनबाद जिला के बलियापुर प्रखण्ड में संथाल जनजाति की आर्थिक स्थिति एवं सरकारी योजनाएं

पंचम अध्याय : संथाल जनजातियों पर सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रभाव

निष्कर्ष

संदर्भ सूचीः–

1. जनगणना 2011 बलियापुर झारखण्ड censusindia.gov.in

2. जिला प्रशासन धनबाद dhanbad.nic.in.

इलेक्ट्रोनिक्स और सूचना प्रौधोगिकी मंत्रालय भारत सरकार

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. मुंडा, आर. डी. (2002). आदिवासी अस्तित्व और झारखण्डी अस्मिता का सवाल प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली।
2. हसनैन, एन. (2016). जनजातीय भारत, (आठवाँ संस्करण) जवाहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली।
3. विद्यार्थी, एल. पी. (2018). कल्चरल टाईप इन ट्राईबल बिहार कोनसेप्ट पब्लिशिंग प्राईवेट लिमिटेड नई दिल्ली।
4. बिद्याभूषन, (2016). झारखंड समाज संस्कृति और विकास– प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. वीरोत्तम, बी. (2020). झारखंड इतिहास एवम संस्कृति (सप्तम संस्कार) बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना।
6. दत्त, बी. (2014). कहानी झारखंड आंदोलन की करूणा पब्लिकेशन रांची, झारखंड।
7. तिवारी, आर. के. (2019). झारखंड की भूगोल बिहार ग्रंथ अकादमी, पटना।
8. अपर्णा, (2020). झारखण्ड की संथाल जनजाति का सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास (1850–1950) ई0 तक एक ऐतिहासिक विश्लेषण पटना विश्वविद्यालय।
9. बी, पी. के. (2022). झारखंड के सदान– महिला झारखण्ड झरोखा, रॉची।
10. सिंह, एस. के. (2023). बिरसा मुंडा और उनका आंदोलन वाणी प्रकाशन 5th एडिशन, नई दिल्ली।
11. अनुज, बी. (2022). झारखंड के शहीद और झारखंड के प्राचीन स्मारक झारखंड झरोखा रांची।
12. सिंह, एस. के. (2002). झारखंड, झारखंड की विकास यात्रा।
13. कुमार, ए. जनवरी (2011). बिहार का भूगोल– नेशनल बुक ट्रस्ट।
14. विश्वास, पी. सी. (1959). संथाल्स ऑफ दि संथाल परगना भारतीय, आदिमजाती सेवक संघ, नई दिल्ली।
15. चौधरी, ए. बी. (1987). दि संथाल्स रिलीजन एण्ड रिचुअल्स, एशिया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
16. कूपलैण्ड आर (1933). दि ब्रिटिश एण्डी स्लेवरी मूवमेंट : ऑर्नटन बटरवर्थ लि लंदन।

17. डाल्टन, ई. टी (1973). डिस्क्रिप्टिव एथनोलौजी ऑफ बंगालः गर्वनमेंट ऑफ बंगाल प्रेम कलकत्ता द्वितीय पुनमुद्रित।

18. घुर्ये, जी. एस. (1963). दि शिड्यूल्ड ट्राईबः पॉपुलर प्रकाशन बम्बई।

19. हसनैन, एन. (1994). ट्राईबल इण्डिया टूडेः पालका प्रकाशन चतुर्थ संस्करण दिल्ली।

20. झा, जे. सी. (1964). दिल कोल इन्सरेक्शन ऑफ छोटानागपुर स्पिंक एण्ड कं कलकत्ता ।

21. सिन्हा, एस. (2012). बिहार में जनजातीय महिलाओं का सशक्तिकरण, प्रथम संस्करण, जानकी, प्रकाशन, पटना।

22. सेन, पी., (2010). चेंजिंग ट्राइबल लाइफ (ए सोशियो पिफलोसोपिफकल पर्सपेक्टिव), कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली।

23. हरिवंश (2016). झारखंड सपने और यथार्थ, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

24. त्रिपाठी, एस. एन. (1989) ट्राइबल डेवलपमेंट (इसूज एण्ड पॉलिसी ऑप्सन्स), अनमोल पब्किेशन्स, प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।

<u>समाचार पत्र एवं पत्रिका</u>

पत्र पत्रिका प्रभात खबर, रांची एक्सप्रेस, हिन्दुस्तान, दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, झारखण्ड के बढते कदम झारखण्ड सरकार

1. भारत की जनगणना 2001, श्रृखला, 1 एवम् 21
2. झारखण्ड पंचायती राज अधिनियम– 2001
3. झारखण्ड सरकार की डायरी 2011 सूचना एवं जन संपर्क विभाग से प्रकाशित।